Answers to RSPL/2

खंड–क

1. (क) भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, पारसी, शैव, वैष्णव आदि विभिन्न धर्मों के लोग प्रेम और सौहार्द से रहना चाहते हैं, किंतु कुछ कट्टरपंथी, संकुचित मानसिकता और धर्म के नाम पर विभिन्न संप्रदायों के लोगों में वैमनस्य की भावना उत्पन्न करने वालों को यह सौहार्द अच्छा नहीं लगता। वे सदैव अपने-अपने संप्रदायों की प्रशंसा एवं दूसरों की निंदा किया करते हैं। उनकी इसी दूषित भावना से सांप्रदायिकता का जन्म होता है।

   (ख) कट्टरपंथी एवं संकुचित मानसिकता के लोगों के कारण दो भिन्न धर्मो तथा कभी-कभी एक ही धर्म के विभिन्न संप्रदायों के लोग आपस में लड़ने लगते हैं। इन दंगों से जान और माल दोनों की हानि होती है। इन कारणों से राष्ट्रीय एकता की भावना को ठेस पहुँचती है।

   (ग) कवि इकबाल का कथन है–"मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना, हिंदी हैं हम वतन है, हिंदोस्तां हमारा।" इस कथन में सांप्रदायिक सौहार्द की खुशबू है। इसके द्वारा इकबाल जी ने हमें मिल-जुलकर रहने का संदेश दिया है। मुल्क हिंदुस्तान की कौमी एकता को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा है कि यहाँ मज़हब हमें आपस में लड़ने-झगड़ने का संदेश नहीं देता, बल्कि परस्पर मिल-जुलकर रहने का संदेश देता है। अतः हमें धार्मिक कट्टरता छोड़कर उदारता के साथ रहने का संकल्प करना चाहिए।

   (घ) समझदार मनुष्य से यह अपेक्षा की जाती है कि वह जिस धर्म से संबंध रखता है, उसका पालन तो करे, किंतु दूसरे धर्म के मार्ग में रोड़े न अटकाए तथा बेवज़ह दखलंदाज़ी न करे।

   (ङ) 'फूटी आँखों न सुहाना'– कुछ लोगों को दूसरों की उन्नति फूटी आँखों नहीं सुहाती है।

2. (क) 'हम मेहनत के दीप जलाकर, नया उजाला करना सीखें।' यह काव्य-पंक्ति देशवासियों को अपनी मेहनत से देश में सकारात्मक परिवर्तन लाने का संदेश दे रही है। इसका आशय यह है कि हम देशवासी अपने परिश्रम से देश में पिछड़ापन, निर्धनता, शोषित जीवन व्यतीत कर रहे लोगों को आगे ले जाने में सहयोग करें, क्योंकि देश में सबके विकास से ही एक नया उजाला लाया जा सकता है।

   (ख) वृक्षों के उदाहरण द्वारा कवि हमें परोपकारमय जीवन जीने की सीख देना चाह रहे हैं। उनका कहना है कि जिस प्रकार वृक्ष तपती हुई दुपहरी में स्वयं झुलसते हुए भी पथिकों को छाया देते हैं, उनके खुशबूदार कोमल फूल माला के रूप में गले की शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार हमें भी परमार्थ के लिए अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए।

   (ग) काव्यांश में कवि ने परमार्थ के लिए अनपढ़ लोगों को पढ़ाने यानी देश से निरक्षरता को मिटाने के लिए कार्य करने तथा जो लोग शोषित हैं तथा चुपचाप शोषण सह रहे हैं, उनको अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने हेतु सजग करने जैसे कार्यों को करने की प्रेरणा दी है।

   (घ) सूरज और हवा का उदाहरण देकर कवि ने हमें निःस्वार्थ भाव से परोपकार करने की प्रेरणा दी है।

   (ङ) 'त्यागी तरुओं' में 'त्यागी' शब्द व्याकरण की दृष्टि से विशेषण है।

खंड–ख

3. (क) मुझे पूरा विश्वास था कि इस प्रतियोगिता में तुम्हारे द्वारा ही पुरस्कार जीता जाएगा।

   (ख) वह चोटिल हो गया इसलिए खेलने नहीं जा सका।

   (ख) सरल वाक्य।

4. (क) उनके द्वारा तुम्हें इस मुद्दे पर कल तक अवश्य सूचित कर दिया जाएगा।

   (ख) क्या तुमसे मेरे साथ चला जा सकेगा?

   (ग) इस संदर्भ में कुछ न कहें।

   (घ) कर्मवाच्य।

5. (क) **कोई** – अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक (सहायक किया 'है' से पूर्व प्रयुक्त होने के कारण पूरक पद के रूप में भी स्वीकार्य)।

(ख) **हिमालय** – व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक।

(ग) **खाते हो** – सकर्मक किया, एकवचन, पुल्लिंग, वर्तमान काल।

(घ) **कीमती** – गुणवाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य 'साड़ी'।

6. (क) उग्रता, गर्व, आवेश, धैर्य आदि।

(ख) शृंगार रस के दो भेद–संयोग शृंगार व वियोग शृंगार।

(ग) विलाप, रुदन, विषाद, दुख की अनुभूति आदि।

(घ) हास्य रस से संबंधित काव्य-पंक्तियाँ–

तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेम प्रताप।
साज मिले पंद्रह मिनट, घंटा भर आलाप॥
घंटा भर आलाप, राग में मारे गोता।
धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता॥

खंड–ग

7. (क) शिष्या ने बिस्मिल्ला खाँ जी को फटी तहमद पहनकर आगंतुकों से मिलने के लिए टोका था। शिष्या का कहना था कि वे एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं, उन्हें भारतरत्न जैसा सर्वोच्य प्रतिष्ठित पुरस्कार भी मिल चुका है। ऐसी स्थिति में यदि वे फटी तहमद पहनकर लोगों से मिलेंगे, तो लोग उनके बारे में अच्छा नहीं सोचेंगे। इसीलिए शिष्या ने फटी तहमद नहीं पहनने की सलाह दी।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ जी का जीवन युवावर्ग को 'सादा जीवन, उच्च विचार' रखते हुए सतत साधना की प्रेरणा देता है। उनका जीवन बताता है कि लक्ष्य-प्राप्ति के लिए बनाव-सिंगार व दिखावेबाज़ी के स्थान पर साधना व समर्पण से अपने लक्ष्य को साधने का प्रयास करें और बाहरी आकर्षणों की अति से स्वयं को बचाएँ, तो उन्हें जीवन की ऊँचाइयों तक पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता।

(ग) बिस्मिल्ला खाँ जी ईश्वर से यही माँगा करते थे कि कभी फटा सुर न बख्शें। वे रियाज़ को प्रमुखता देते थे। बनाव-सिंगार से दूर उन्होंने पूर्ण समर्पण से संगीत की साधना की थी। इन्हीं कारणों से कहा जा सकता है कि वे संगीत के एक सच्चे साधक थे।

8. (क) मन्नू भंडारी जी के जीवन को दिशा दिखाने तथा उनके व्यक्तित्व को गढ़ने में उनकी अध्यापिका शीला अग्रवाल जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वे उनके लिए केवल एक अध्यापिका न होकर सच्ची मार्गदर्शिका बनीं। उनकी प्ररेणा ने लेखिका के अंदर एक अद्भुत आत्मविश्वास भर दिया। उन्होंने लेखिका को जीवन में सही निर्णय लेकर बाधाओं का सामना करते हुए आगे बढ़ना सिखाया। उनके पदचिह्नों पर चलते हुए वे सामाजिक आंदोलनों एवं गतिविधियों में भाग लेकर उन दकियानूसी, घरेलू बंदिशों को तोड़ने में कामयाब रहीं, जिन्हें तोड़ना उन दिनों न केवल उनके लिए, बल्कि हर लड़की के लिए बेहद मुश्किल काम था।

(ख) शहनाई को मंगलध्वनि का वाद्य माना जाता है। इसे मांगलिक अवसरों पर वातावरण में पवित्रता व आनंद भरने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। बिस्मिल्ला खाँ शहनाई के सच्चे साधक थे। उन्होंने अपनी साधना से शहनाई को साध लिया था। उनका शहनाई वादन बेमिसाल था। वे जब तन्मयता के साथ शहनाई बजाते, तो वातावरण को मंगलपूरित होते देर न लगती थी। उनकी इन विशेषताओं के कारण उन्हें मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

(ग) बालगोबिन भगत गृहस्थ जीवन जीते हुए भी मोह-माया में नहीं बँधे थे। वे कबीर को अपना भगवान मानते थे तथा अपने खेत की पैदावार को भी कबीरपंथी मठ को अर्पित कर देते थे और वहाँ से प्रसाद रूप में जो भी प्राप्त होता था, उसी से गुज़ारा करते थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे और सबसे खरा व्यवहार करते थे। वे कभी किसी की चीज़ नहीं छूते थे। उनका आचरण साधु की परिभाषा पर पूरी तरह खरा उतरता था। इसी कारण उन्हें 'साधु' कहा जाता था।

(घ) लेखक ने संस्कृति और असंस्कृति में अंतर बताते हुए कहा है कि संस्कृति का अर्थ केवल आविष्कार करना नहीं होता है। यह आविष्कार जब मानव कल्याण की भावना से जुड़ जाता है, तभी हम उसे संस्कृति कहते हैं, किंतु जब आविष्कार करने की योग्यता का उपयोग विनाश करने के लिए किया जाता है, तब यह संस्कृति ही असंस्कृति बन जाती है। अतः यह कहना उचित होगा कि संस्कृति मानव के कल्याण के लिए होती है और उसके विकास तथा ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करती है, जबकि असंस्कृति का रूप अकल्याणकारी होता है और वह मानवता को विनाश की ओर ले जाती है।

9. (क) काव्यांश में माँ के दुख को प्रामाणिक बताया गया है। एक ऐसी माँ, जिसके लिए उसकी बेटी उसके जीवनभर की पूँजी है और उस पूँजी को वह किसी और को सौंपने जा रही है। वास्तव में कन्यादान उस माँ के लिए अपने जीवन का ही अर्पण है।

(ख) माँ की 'अंतिम पूँजी' उसकी बेटी को कहा गया है, क्योंकि बेटी घर में माँ की सच्ची साथी होती है। माँ उसके साथ ही अपना सुख-दुख बाँटती है तथा उसके व्यक्तित्व को गढ़ने में माँ अपना ममत्व, स्नेह, श्रम सब कुछ लगा देती है। इसलिए उसे विदा करते समय माँ को लगता है कि जैसे उसकी 'अंतिम पूँजी' उसके पास से दूर जा रही हो।

(ग) 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की।' –पंक्ति में कवि ने बेटी के बारे में यह बताया है कि अभी उसे जीवन की वास्तविकताओं का पूरी तरह ज्ञान नहीं था। वह विवाह के सुखमय जीवन की सुखद कल्पना से हर्षित थी, किंतु ससुराल में मिलने वाली कठोर सच्चाइयों, अनेक ज़िम्मेदारियों एवं चुनौतियों से बिल्कुल अनजान थी।

10. (क) 'इहाँ कुम्हड़बतियाँ कोउ नाहीं।'–पंक्ति के द्वारा लक्ष्मण ने परशुराम जी से यह कहना चाहा है कि वे बार-बार वध करने की बात कहकर उन्हें भयभीत करने का प्रयास न करें, क्योंकि वे कोई कुम्हड़े (कद्दू) का कच्चा फल नहीं हैं, जिसे तर्जनी दिखाकर सुखाया जा सके। यहाँ भाव यह है कि वे भी सूर्यवंशी वीर हैं और इस प्रकार वध की धमकी और कुठार आदि से तनिक भी भयभीत होने वाले नहीं हैं।

(ख) शिशु की मुस्कान को दंतुरित इसलिए कहा गया है, क्योंकि जब वह मुस्काता है, तो उसके मुख में एक-दो दूध के दाँत दिखाई देते हैं। उसकी निश्छल मुस्कान के समय इन दाँतों की शोभा अद्भुत होती है, जो मृतक यानी पाषाण हृदय व्यक्ति में भी प्राणों अर्थात् सरसता का संचार कर देती है।

(ग) गोपियों को योग कड़वी ककड़ी के समान प्रतीत होता है, क्योंकि वे नहीं चाहती हैं कि हारिल पक्षी की लकड़ी के समान मन में बसाए कृष्ण-प्रेम को छोड़ दें। वे निर्गुण ब्रह्म या योग से उस प्रेम को मन से हटाना नहीं चाहती हैं। उद्धव योग-संदेश द्वारा गोपियों के मन से श्याम के प्रति प्रेम की भावना को हटाना चाहते हैं। इसी कारण गोपियों को उनका योग-संदेश व्यर्थ लगता है।

(घ) गर्मियों में प्यास से व्याकुल मृग को रेगिस्तान में थोड़ी दूरी पर पानी होने का भ्रम होता है, किंतु पास जाने पर केवल रेत ही रेत दिखाई देता है और फिर वहाँ से आगे पानी होने का भ्रम होने लगता है और वह पानी के इस भ्रम को वास्तविक पानी समझकर उसे पाने के लिए भागता रहता है। उसकी इस स्थिति को ही 'मृगमरीचिका' या 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। इस प्रकार प्रतीकात्मक अर्थ में 'मृगतृष्णा' मिथ्या भ्रम अथवा छलावे की स्थिति को कहा जा सकता है। 'छाया मत छूना' कविता में कवि कहना चाहता है कि जीवन में प्रभुता यानी बड़प्पन की अनुभूति भी एक प्रकार से भ्रम ही है, क्योंकि व्यक्ति मान-सम्मान, धन-संपत्ति, पद-प्रतिष्ठा के लिए भागता रहता है और इस भ्रम में वह पूरा जीवन छला जाता है। यह भ्रम उसे सुख क्षणिक, किंतु दुख अधिक देता है।

11. सरकारी धन जनता का होता है, किंतु 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में अधिकारियों द्वारा इस धन का दुरुपयोग करते हुए दिखाया गया है। मेरी राय में क्या ऐसा करना बिल्कुल भी उचित नहीं था, क्योंकि एक सच्चे अधिकारी को सरकारी ख़ज़ाने का एक-एक पैसा सोच-समझकर और समाज-कल्याण में खर्च करना चाहिए। यदि मैं एक सरकारी अधिकारी होता, तो सरकारी पैसे को पूरी ईमानदारी से जनता के हित में ही खर्च करता। मैं यह सुनिश्चित करता कि उस धन का उपयोग समाज से अशिक्षा, ग़रीबी, बेरोज़गारी आदि को दूर करने में हो तथा यह भी ध्यान रखता कि समाज में यदि जनता के पैसों से कोई निर्माण कार्य हो रहा है, तो उसका संबंध समाज की भलाई से हो, न कि किसी व्यक्ति विशेष को प्रसन्न करने के लिए। यदि इसमें मुझे किसी व्यक्ति विशेष को प्रसन्न करने का कारण दिखाई देता, तो मैं अपने स्तर से उसकी अनुमति नहीं देता।

अथवा

'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ में आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति का दोहन करने तथा पर्यावरण-संरक्षण के प्रति असावधान रहने का उल्लेख किया गया है। वास्तव में, इन उल्लेखों से यह लगता है कि बुद्धिजीवी होते हुए भी मनुष्य ने प्रकृति की ओर से अपनी आँखें बिल्कुल मूँद ली है। मैं एक जागरुक नागरिक का कर्तव्य निभाते हुए 'मुड़ो प्रकृति की ओर' नामक एक जागरुकता अभियान चलाता तथा पहले इसे अपने नगर से आरंभ करता और अपने साथ कुछ अन्य जागरुक युवाओं को लेकर इसे ज़िले में, मंडल में, प्रदेश में और फिर राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने का प्रयास करता। इसके लिए मैं नुक्कड़ नाटक-मंडलियों की भी मदद लेता और उनसे स्थान-स्थान पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन करवाता। मुझे पता है कि किसी भी अभियान को सफल बनाने में आजकल मीडिया की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, अतः मैं मीडिया की भी मदद लेता।

खंड–घ

12. (क) **युवाओं में बढ़ती हिंसावृत्ति**

हिंसावृत्ति का अर्थ है–ऐसा दूषित व्यवहार, जिसमें मन संयम की सीमाओं को लाँघकर क्रोध के वशीभूत दूसरों को शारीरिक एवं मानसिक हानि पहुँचाने का कृत्य करने में किसी प्रकार की लज्जा एवं ग्लानि का अनुभव नहीं करता। यह स्वभाव मानवीय नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसे लक्षण पशुओं एवं दानवों में पाए जाते हैं, सच्चे मानवों में नहीं, परंतु इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि ये बातें जानते हुए भी आज के समाज में हिंसात्मक गतिविधियाँ बढ़ती चली जा रही हैं।

आज युवावर्ग में सहिष्णुता, विनम्रता, संयम आदि जैसे गुणों का लोप होता जा रहा है। युवावर्ग पश्चिमीकरण और भौतिकवाद की चाह में स्वार्थी होता जा रहा है। वह भोगवादी संस्कृति पर विश्वास करता है। आस्तिकता उसके लिए विचारों का दकियानूसीपन है और मानसिक शांति के लिए परम सत्ता में ध्यान लगाना, समय की बर्बादी। उसकी ऐसी मानसिकता ने आज उसे केवल अपने सुख-भोगों तक सीमित कर दिया है। वह अपने आप को झुकाना नहीं जानता। नीतिपरक बातें उसे कान में विष घोलती प्रतीत होती हैं और हिंसक व ऊलूल-जुलूल बातें उसे मनमोहक लगती हैं। इसी कारण वह बात-बात पर आग बबूला होकर स्वयं को शक्तिसंपन्न दिखाना चाहता है। छोटी-छोटी बातों पर अंगारे उगलना या मारपीट पर उतारू हो जाना आज के युवाओं के लिए सामान्य-सी बात है।

आज जिस प्रकार युवा हिंसक होते जा रहे हैं, उसे देखकर कहा जा सकता है कि अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता बापू की आत्मा यह दृश्य देखकर अवश्य ही विकल हो जाती होगी। विद्यालयों में नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाकर तथा सिनेमा, टी०वी० आदि पर हिंसात्मक दृश्यों पर रोक लगाकर ही युवाओं में बढ़ती इस दानवी प्रवृत्ति को रोका जा सकता है।

(ख) **लहूलुहान होती सड़कें: दोषी कौन?**

आज महानगरीय जीवन बेतहाशा भाग रहा है। इसी आपाधापी में सड़कें भी लहूलुहान हो रही हैं। सड़क हादसों में हर दिन सैकड़ों लोग मारे जाते हैं और सैकड़ों की संख्या में घालय होते हैं। समाचारपत्र के पन्नों पर सड़क हादसों के समाचार अक्सर छपे हुए होते हैं। आखिर क्यों अमूल्य जीवन गति या असावधानी की भेंट चढ़ जाता है? आखिर इन सड़क हादसों के लिए कौन ज़िम्मेदार है? आँकड़े बताते हैं कि ऐसे हादसों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती चली जा रही है। ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि आज के मनुष्य के पास समय का अभाव है। वह कम से कम समय में अपने गंतव्य तक पहुँचना चाहता है। इसके लिए वह जहाँ वाहन को निर्धारित गति सीमा से बहुत अधिक तेज़ चलाता है, तो वहीं अन्य सड़क सुरक्षा नियमों की अनदेखी भी करता है। इससे कभी-कभी बहुत ही दर्दनाक हादसे हो जाते हैं। परिवार के परिवार ऐसे हादसों से उम्रभर नहीं उबर पाते।

इन दुर्घटनाओं के लिए सीधे तौर पर तो वाहन चालक ही ज़िम्मेदार होते है, किंतु कई बार ये घटनाएँ यातायात पुलिस व सड़क निर्माण विभाग की असावधानी से भी घटित हो जाती हैं। इन हादसों को रोकने के लिए पुलिस द्वारा सड़क सुरक्षा के प्रति जागरुकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं तथा कभी-कभी ऐसे चालकों का चालान भी काटा जाता है, जो सड़क सुरक्षा

नियमों का पालन नहीं करते। आज तकनीकी युग में ऐसी कारें आ गई हैं, जो हवा से बातें करती हैं, ऐसी गाड़ियों को चलाने के लिए प्रशिक्षण के साथ-साथ संयम की भी ज़रूरत होती है।

अतः कहा जा सकता है कि यदि हर व्यक्ति यह संकल्प करे कि वह यातायात नियमों का पालन ईमानदारी से करेगा और गति से अधिक जीवन को मूल्यवान मानेगा, तो सड़क हादसों पर रोक लगाई जा सकती है।

(ग) **अनुशासन का विद्यार्थी जीवन में महत्त्व**

'अनुशासन' शब्द 'शासन' शब्द में 'अनु' उपसर्ग जोड़ने से बना है, जिसका अर्थ है– ऐसे नियम या रीतियाँ, जो व्यवस्था बनाने में सहायक हों। अनुशासन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को निखारने, सँवारने व व्यवस्थित करने के लिए अत्यावश्यक है। इसके बिना जीवन के किसी भी क्षेत्र में सुचारु रूप से कार्य नहीं किया जा सकता। इसका महत्त्व सर्वविदित है। घर, परिवार, विद्यालय, कार्यालय, खेल, राजनीति, प्रशासन, रक्षा-सेवा आदि सभी में अनुशासन की आवश्यकता होती है। अनुशासन व प्रगति एक-दूसरे के पूरक हैं। अनुशासित व्यक्ति को विश्वसनीय माना जाता है। अनुशासन के साथ-साथ समर्पण, सच्चाई, ईमानदारी, त्याग, आत्मविश्वास जैसे गुण व्यक्ति के अंदर स्वतः ही चले आते हैं।

दुर्भाग्य की बात है कि आज देश के कर्णधारों के अंदर अनुशासनहीनता की भावना बढ़ती चली जा रही है। इस अनुशासनहीनता का कारण तलाशकर, इसके समाधान का प्रयास किया जाना ज़रूरी है, क्योंकि यदि अभी इस विषैले पौधे की जड़ को नहीं काटा गया, तो इसका वृक्ष रूप में आकर समाज में अपने दुष्परिणामों से हाहाकार मचाना तय है। अतः अपने और समाज की भलाई के लिए अनुशासन को जीवनचर्या में मन से सम्मिलित करें, वरना वह दिन दूर नहीं, जब यह जीवन के हर क्षेत्र में अपने पग फैलाकर जीवन से सुख-शांति जैसे शब्दों का सफ़ाया कर देगा।

13. सेवा में

श्रीमान प्रधानचार्य जी
अ ब स स्कूल
क ख ग नगर

दिनांक–10/12/2017

विषय– गार्ड्स के मना करने के बावजूद स्कूटी या अन्य वाहनों से विद्यालय आने-जाने वाले छात्रों पर रोक लगाने का अनुरोध।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके प्रतिष्ठित विद्यालय की दसवीं कक्षा में पढ़ने वाला एक जागरुक छात्र हूँ तथा आपका ध्यान बिना लाइसेंस के स्कूटी या अन्य वाहनों से विद्यालय आने वाले छात्रों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि विद्यालय के कुछ छात्र पिछले सप्ताह से स्कूटी, बाइक एवं कार आदि से विद्यालय आ रहे हैं। बिना लाइसेंस के उनका वाहन चलाना एक प्रकार से अवैध है। ऐसे छात्र अनियंत्रित गति से वाहन चलाते हैं, इससे इनकी जान तो जोखिम में रहती ही है, साथ ही पैदल आने-जाने वालो छात्रों व अन्य लोगों को भी इनसे खतरा बना रहता है। गार्ड्स के कहने पर भी ये छात्र नहीं मानते हैं और उन्हें धमकाने लगते हैं। अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया ऐसे छात्रों के अपने वाहनों से विद्यालय आने पर रोक लगवाने का कष्ट करें।

इस कार्य के लिए सभी छात्र हृदय से आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय
य र ल

अथवा

छात्रावास
कमरा नं.-10
अ ब स स्कूल
क ख ग नगर
दिनांक–10/12/2017

प्रिय सागर,

सप्रेम नमस्कार।

मैं यहाँ पर कुशलपूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी सकुशल होगे। मेरे विद्यालय में अभी कुछ दिन पहले 'आरोग्यम्' कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें विद्यालय के मैदान में एक साथ डेढ़ हज़ार बच्चों ने योग के विभिन्न आसनों पर अपनी प्रस्तुति देकर मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर बच्चों को योग के लाभों से भी अवगत करवाया गया। मैंने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया था, तभी से मैं नियमित रूप से योगाभ्यास कर रहा हूँ। ऐसा करने से मेरी सेहत में बहुत सुधार हुआ है। मैंने सुना है कि तुम्हारा स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं चल रहा है तथा तुम आलसी भी होते जा रहे हो। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि यदि तुम सुबह के समय आधा घंटा भी योग कर लो, तो न केवल तुम्हारी सेहत अच्छी हो जाएगी, बल्कि तुम्हारा आलस्य भी दूर हो जाएगा तथा अपने सभी कार्य तुम मन से पूर्ण किया करोगे। मुझे विश्वास है कि तुम मेरी सलाह अवश्य मानोगे। मम्मी व पापा को मेरी ओर से प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र

राजन राजपूत

14.

संजीवनी अस्पताल

आपके स्वास्थ्य का सच्चा साथी

निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का लाभ उठाएँ
शिविर में निःशुल्क सलाह व दवाइयाँ भी पाएँ।

दिनांक 02/12/2017 को सुबह 10 बजे से लेकर शाम 5 बजे तक देश के सुप्रसिद्ध डॉक्टर्स के द्वारा सामान्य स्वास्थ्य जाँच के साथ-साथ शुगर, ब्लड प्रेशर, आँखों व दाँतों के चैकअप की व्यवस्था की गई है।

शिविर में अवश्य आएँ, क्योंकि स्वास्थ्य है, तो सब कुछ है.....।

संजीवनी अस्पताल–सी० ब्लॉक, यमुना विहार, दिल्ली, फ़ोन– xxxxxx45

अथवा

परिधान बुटीक

जैसा चाहें, वैसा सिलवाएँ

लाजवाब फ़िटिंग!
लाजवाब लुक!!

विशेषताएँ–
अनुभवी टेलर्स, समय पर काम,
कम दाम, ज़बरदस्त काम

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

विवाह, त्योहारों आदि अवसरों पर केवल चार दिनों में कपड़े सिलने की व्यवस्था।

परिधान बुटीक, दुकान नं०-6 सेंट्रल मार्केट, अ ब स नगर, फ़ोन– xxxxxx2010